'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 117- Literature & Translation
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
February-201

# अनुवाद विधा का विकास

डॉ. योगिता अपूर्व हिरे
अध्यक्षा–हिन्दी विभाग
म. गां. वि. मंदिर संचलित
लोकनेते व्यंकटराव हिरे महाविद्यालय
पंचवटी–नाशिक

डॉ. शैलजा जायसवाल
अध्यक्षा–हिन्दी विभाग
म. गां. वि. मंदिर संचलित
कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय,
मनमाड–नासिकए मो.९३७१५०२९८१
drshailajajaiswal@gmail.com

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक मनुष्य जीवन के अनेक क्षेत्रों का विकास अनुवाद विधा के कारण संभव हो सका है। अनुवाद साहित्यिक रचना होते हुए भी मौलिक रचना की श्रेणी में नहीं आती है बल्कि मौलिक रचना के निकटतम पहुँचने का प्रयास होती है। इस विधा के लिए 'भाषांतर', 'रूपांतर', 'शब्दांतर' आदि शब्दों का प्रयोग किया जाता है। किसी द्वारा कही गयी बात को, समझ कर पुनः कहना अनुवाद है अनु का अर्थ है पीछे कहना, या दुहराना आदि होना है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार 'भाषान्तर' अतिरिक्त 'प्रतिकान्तर' शब्द भी कहा है क्योंकि विचार किसी ने किसी प्रतीक के माध्यम से कहे जाते है– भाषा में प्रतीकही शब्द होते है। अर्थात भाषा के प्रतीक शब्द होते है। भोलानाथ तिवारी के नुसार, ''एक प्रतीक द्वार व्यक्त विचार के दूसरे प्रतीक द्वारा व्यक्त करना प्रतीकान्तर है।'' साथ ही तिवारी जी ने एक ही भाषा में व्यक्त विचार को दूसरों शब्दों व्यक्त करने को 'शब्दान्तर' कहा है। भाषा में व्यक्त करने को 'भाषान्तर' कहा है। गोस्वामी तुलसी दास ने मानस में अनुवाद शब्द का प्रयोग किया है 'सुनन फिरऊ हरिगुण अनुवादा'–यहाँ अनुवाद पुनः कहने के रूप में आया है। अनुवाद में स्त्रोत भाषा को लक्ष्य भाषा मे कहा जाता है। अर्थात जिस भाषा से अनुवाद किया जाता है उसे स्त्रोत भाषा कहते है और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उसे लक्ष्य भाषा कहते है। एक भाषा के विचारों को, दूसरी भाषा में व्यक्त करता कठिन कार्य होता है क्योंकि प्रत्येक भाषा की व्याकरणिक संरचना भिन्न होती है उसकी अपनी ध्वनि, रूप, वाक्य और अर्थ मूलक विशेषाताएँ होती है। इसलिए अनुवादक को दोनों ही भाषाओं का सम्यक ज्ञान होना चाहिए।

संस्कृत की विभिन्न परिभाषाओं में अनुवाद को पुनःकथन, ज्ञानार्थस्त प्रतिपादन अर्थ्यात, कहे गये अर्थ को फिर से कहना, ज्ञात तथ्य की प्रस्तुति आदि को अनुवाद कहा गया है। मन, बुद्धि और ज्ञान की पीपासा के लिए अनुवाद आवश्यक है। भारत में अनुवाद से ही विविध विषयों का ज्ञान संभव है। है क्योंकि हमारा देश भाषा और बोलियों का व्यापक देश है। अनुवाद ही वह सेतु है जो भारत की भाषाओं और अनेक बोलियों को समेट कर रख सकता है। आज आधुनिक हिन्दी साहित्य विविध विधाओं के सदृढ़ भवन के रूप में खड़ा है। आधुनिक काल के आरम्भ में अनुदित कृतियों के माध्यम से साहित्य में नई सोच, नए विचार, नव चिन्तन का सूत्रपात हुआ। हिन्दी की सभ सभी विधाओं में आधुनिक विचारों एवं चिन्तन में बहुत सा श्रेय अनुवाद साहित्य का है। हमें यह स्वीकार करना होगा कि विश्व की प्रत्येक भाषा, अन्य भाषाओं में मौजूद अनुभवों, विचारों एवं चिन्तन को अपनी भाषा में ढाल कर ही प्रौढ़ होती है। यही अनुवाद की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि होती है।

अनूदित साहित्य की भूमिका में सर्वप्रथम औपनिवेशिक शासकों द्वारा शासकीय एवं अपने वर्चस्व की पूर्ति के लिए करवाया गया अनुवाद साहित्य है। सन १७५७ ई. में प्लासी का युध्द और १७६४ ई. में बक्सर के युध्द के पश्चात बंगाल और बिहार ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन में आ गए थे। तब शासकों ने हिन्दू न्याय व्यवस्था, हिन्दू उत्तराधिकार निश्चित करने हेतू १७७६ ई. में मनुस्मृति का 'ए कोड ऑफ जेण्टू लॉज' नाम अनुवाद करवाया गया। कम्पनी सरकार को धीरे–धीरे समझ में आया कि जिस देश की संस्कृति पर उन्हें